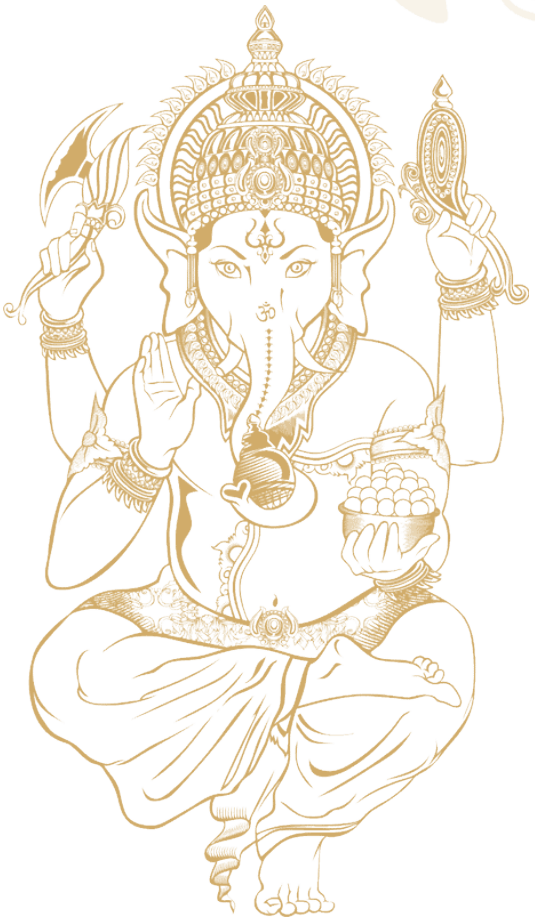

Vinit

14 Mar 2026

09:13 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121600101**

तिथि 14/03/2026 **समय** 09:13:26 **वार** शनिवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:19:25 घं
वेलान्तर	00:09:13 घं
सूर्योदय	06:32:29 घं
सूर्यास्त	18:28:42 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	वरियान
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भे-भैरव
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

सूर्य 4वर्ष 6मा 27दि

सूर्य

14/03/2026
10/10/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	14/03/2026
राहु	28/10/2026
गुरु	16/08/2027
शनि	28/07/2028
बुध	04/06/2029
केतु	10/10/2029
शुक्र	10/10/2030

योगिनी

संकटा 6वर्ष 1मा 6दि

संकटा

14/03/2026
19/04/2032

	14/03/2026
मंगला	20/04/2026
पिंगला	29/09/2026
धान्या	30/05/2027
भ्रामरी	19/04/2028
भद्रिका	30/05/2029
उल्का	29/09/2030
सिद्धा	19/04/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:38:11	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			29:20:33	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.48	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			29:49:58	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	राहु	सम राशि	1.12	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	14:52:55	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	सम राशि	1.37	ज्ञाति	भ्रातृ	क्षेम
बुध	व	अ	16:33:25	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.21	मातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			20:52:38	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.12	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			15:21:09	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	उच्च राशि	1.14	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि		अ	09:06:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.02	कलत्र	आयु	साधक
राहु			14:41:37	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			14:41:37	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

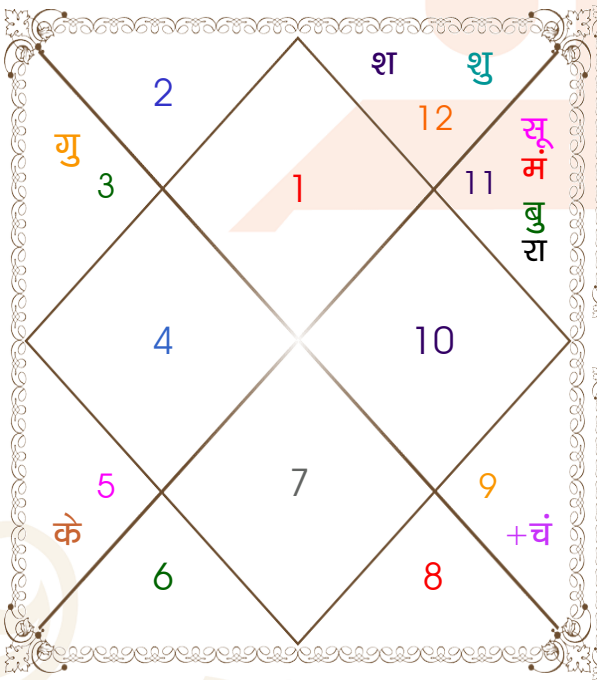

चन्द्र कुंडली

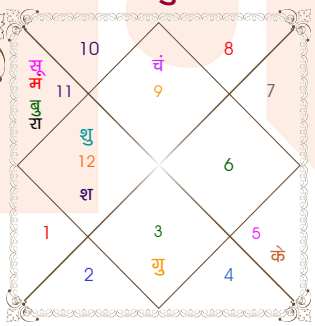

नवमांश कुंडली

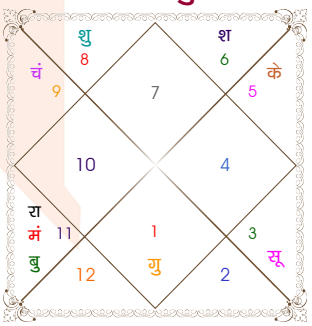

सर्वाष्टकवर्ग

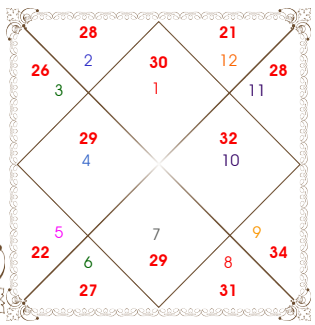

दशमांश कुंडली

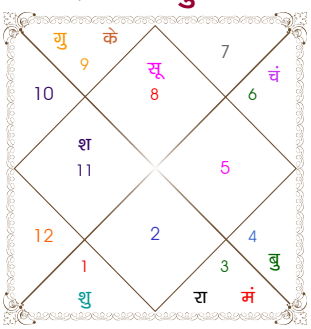

नक्षत्रफल

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय,योनि नकुल, नाड़ी अन्त्य गण मनुष्य तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भे" या "भै" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

समाज में आप एक गणमान्य व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मुख्य रूप से सात्विक गुणों से सम्पन्न रहेंगे। आप अपने कठिन से कठिन कार्य या समस्या को शांताचित्त से समाधान करने के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे। जीवन में नाना प्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। धन से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन में इसका आपके पास कम ही अभाव रहेगा। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कार्यो में पारंगत होने के कारण आप समाज में एक विद्वान के रूप में ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित कर सकेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप स्वभाव से ही विनम्र होंगे तथा सभी लोग आपकी विनयशीलता से प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेगी तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का आप नियमपूर्वक अनुपालन करने मे प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आपमें कृतज्ञता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोक प्रिय रहेंगे तथा उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने में सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपकी शारीरिक आकृति स्थूल तथा कद सामान्य रहेगा। साथ ही आप एक शूरवीर एवं साहसी व्यक्ति होंगे। तथा अपने अधिकाँश कार्यो को साहस पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त विवाद आदि में आप शत्रु पक्ष पर विजय

प्राप्त करने में सर्वदा सफल रहेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके मन में दान शीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी। तथा हृदय में दया एवं करूणा का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अच्छे कार्यों को ही सम्पन्न करेंगे। जिससे समाज में अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे। साथ ही आप एक प्रभुता सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप स्त्री तथा पुत्र आदि के सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा। परन्तु कभी कभी आप अभिमान का प्रदर्शन भी लोगों के समक्ष करेंगे। जिससे लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट भी रहेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा गला दीर्घ रहेगा। तथा ओंठ, दान्त एवं कानों में स्थूलता रहेगी। एवं भुजाएं मजबूत तथा मांसल रहेंगी। आप अपने पैतृक धन से सुसम्पन्न रहेंगे। तथा आजीवन सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आपके

मन में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा जीवन में समयानुसार आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। लेखन कार्य में भी आप रूचिशील रहेंगे। तथा समय समय पर कविता सृजन आदि में सफलता तथा ख्याति प्राप्त करते रहेंगे। आपका शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा तथा अन्य लोग आपके बल से प्रभावित रहेंगे। आप एक उच्च कोटि के कुशल वक्ता होंगे। तथा अपने प्रभावशाली वक्तव्यों तथा कार्यो से अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकेंगे। समाज में सभी के प्रति मन में आपके हार्दिक सम्मान रहेगा। चित्रकला के प्रति आपमें विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वरूप भी गम्भीरता से युक्त रहेगा तथा अधिकांश कार्य भी गम्भीरता से ही सम्पन्न होंगे। धर्म में भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में इसका ज्ञानार्जन भी करेंगे। आपके अपने भाईयों से सामान्य संबंध रहेंगे। आप स्नेह तथा समानता के व्यवहार से ही वश में रहेंगे। किसी अन्य दवाब में आपसे कोई भी कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। न हीं आप किसी कार्य को करने के लिए तैयार होंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखे गोल तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगी तथा हाथ एवं कन्धों की लम्बाई भी कुछ अधिक ही रहेगी। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता है। पानी के नजदीक निवास करना या भ्रमण आदि करने में आप रूचिशील रहेंगे। एवं ऐसे अवसरों को प्राप्त करने के लिए भी आप प्रयत्न शील रहेंगे। आप गूढ़ से गूढ़ विषय का ज्ञान प्राप्त करके उसे हृदयगम करने में भी सफल रहेंगे। आप प्रायः प्रसन्नचिन्त ही रहेंगे एवं अनावश्यक चिन्ता या दुख मन में नहीं रखेंगे। आपकी शरीर की अस्थियां भी मजबूत होंगी। साथ ही कृतज्ञता के भाव से भी आप सुशोभित रहेंगे। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे। तथा हार्दिक रूप से उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी व्यक्ति होंगे तथा नित्य किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप सक्रिय रहेंगे तथा आराम से नहीं बैठ सकेंगे। आप बोलने में अत्यन्त ही प्रवीण होंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। त्याग की भावना का भी आप में नैसर्गिक समावेश रहेगा। तथा आवश्यकतानुसार इस प्रवृति का

आप अनुपालन करेंगे। साथ ही आप एक साहसी पुरूष भी होंगे। तथा अधिकतर सांसारिक समस्याओं का साहसपूर्वक समाधान करेंगे। आपके शत्रु भी आपसे हमेशा पराजित रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकार प्राप्तवर्ग तथा सम्पन्न लोंगों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी सक्षम रहेंगे तथा स्वभाव से ही विनम्र एवं सुशील रहेंगे। आप एक चरित्रवान पुरूष होंगे जो अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय रहेगा। आप स्पष्ट बोलने में विश्वास करेंगे। अतः सभी लोग आपकी स्पष्टवादिता से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए खूब सोचविचार कर व्यय करेंगे। जिससे अनावश्यक आर्थिक संकट उत्पन्न न हो सके।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके समस्त शारीरिक अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ माने जाएंगे। तथा सभी परिवारिक जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकला एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी। इसके अनुपालन के लिए आप हमेशा जीवन में प्रयत्न शील रहेंगे। इसके साथ ही आपका स्वभाव शान्त होगा। तथा अन्य किसी के प्रति आप के मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक सुशील गुणवती एवं बुद्धिमती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे तथा समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति भी करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी। जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका शरीर स्थूल भी होगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रहकर समाज में आदरणीय रहेंगे। तथा सभी वर्गो के मध्य लोकप्रियता भी प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यो से श्रेष्ठ समझे जाएंगे।

आप धार्मिक प्रवृति से भी युक्त रहेंगे अतः देवता ब्राहमण एवं गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आप अत्यन्त ही सुमधुर गति से गमन करेंगे। परन्तु सहनशीलता का अभाव होने के कारण कई बार अनावश्यक समस्याओं को उत्पन्न करेंगे एवं परेशानी की अनुभूति भी करेंगे।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः धार्मिक कार्य कलापों में आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। तथा देवताओं एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। कभी कभी गर्व की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी। तथा समाज में अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का आप प्रदर्शन करेंगे। दया एवं करूणा की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। शारीरिक रूप से आप बलशाली रहेंगे तथा स्वभुजबल से अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही विविध प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा तथा अन्य बहुत से लोग आपके द्वारा सुख को प्राप्त करेंगे।

समाज में आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से सम्पन्न रहेंगे। आपकी आँखे भी बड़ी बड़ी रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगे। आपका वर्ण सुन्दरता लिए गौर वर्ण होगा। नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगे अर्थात् आप किसी नगर या समाज के गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही परोपकार की भावना से युक्त रहेंगे। तथा अन्य जनों की भलाई के कार्यों को नित्य चतुराई से सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान को अर्जित करने में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा अन्य धनी लोग भी आपका हृदय से आदर करेंगे। साथ ही आप विद्वान होंगे एवं कई संस्थाओं के प्रधान या अध्यक्ष भी हो सकते हैं। माता पिता का आपके प्रति अत्यन्त ही स्नेह का भाव रहेगा एवं आपका भी

उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको

आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए श्रावण मास तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी, तिथियां भरणी नक्षत्र वज्रयोग तैतिल करण शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3, 8, 13 तिथियों भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिल करण में कोई में कोई भी शुभ कार्य न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा एवं मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक चिन्ताऐं शारीरिक परेशानी व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा शुभ कार्यों के सिद्ध होने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा मंगल एवं वृहस्पति के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र को किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा एवं शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।